12

अन्तिम निर्णय?

(3:9-20)

हम रोमियों के मुख्य भाग के पहले विभाजन के अन्त में पहुंच चुके हैं। इस पूरे भाग में पौलुस ने न्यायालय में इस्तेमाल की जाने वाली शब्दावली का इस्तेमाल किया है। उदाहरण के लिए, 2:15 में उसने अन्यजातियों के "विवेक भी गवाही देते हैं और उनके विचार परस्पर दोष लगाते या उन्हें निर्दोष ठहराते हैं" की बात की। इस पाठ के लिए वचन में पौलुस ने फिर मुकदमे के रूपक का इस्तेमाल किया। उदाहरण के लिए, उसने कहा, "हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं" (आयत 9ख)। लियोन मौरिस ने ध्यान दिया कि "[आयत 9 की] भाषा कानूनी है, जैसा कि रोमियों के इस भाग में अधिकतर है।"[1] REB का अनुवाद है "हम पहले ही यह दोष लगा चुके हैं कि सब के सब यहूदी और यूनानी एक समान पाप की शक्ति के अधीन हैं।" 1:18 में आरम्भ हुआ मुकदमा खत्म होने को है और अब "अन्तिम निर्णय" की बारी है।

अन्तिम आधार वाक्य (3:9)

3:1 में यह प्रश्न पूछा गया था, "अतः यहूदी की क्या बड़ाई?" पौलुस ने इसका उत्तर दिया था, "हर प्रकार से बहुत कुछ" (आयत 2क)। अब वैसा ही प्रश्न पूछा गया है:[2] "तो फिर क्या हुआ? क्या हम उनसे अच्छे हैं?" (आयत 9क)। RSV का अनुवाद है "क्या हम यहूदी[3] किसी प्रकार बेहतर [यानी, अन्यजातियों से बेहतर] हैं ?" इस बार पौलुस ने उत्तर दिया, "कभी नहीं" (आयत 9ख)। उत्तर में यह अन्तर क्यों है? क्योंकि एक जैसे होने के बावजूद इनके प्रश्न एक जैसे नहीं हैं।

- क्या यहूदी ही अन्यजातियों के ऊपर कोई लाभ था, हां "उसके पास लिखित व्यवस्था थी" (आयत 2ख)।
- क्या उसने उस लाभ का इस्तेमाल किया था? *नहीं,* क्योंकि वह व्यवस्था को पूरी नहीं कर पाया था (2:13, 23, 25)।
- तो क्या वह अन्यजाति से किसी प्रकार बेहतर था जिसे परमेश्वर ने कोई लिखित व्यवस्था नहीं दी थी? *नहीं।*

1:18-32 में पौलुस ने यह साबित किया था कि अन्यजातियों (गैर यहूदियों या यूनानियों) ने उस व्यवस्था को नहीं माना था जो उनके पास थी। 2:1-3:8 में उसने यहूदियों के लिए भी वही निष्कर्ष निकाला। अब उसने कहा, "क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा

चुके हैं [1:18 से इस आयत तक] कि वे सब के सब पाप के वश में हैं'' (आयत 9ग)। ''हम दोष लगा चुके हैं'' शब्द *proaitiaomai* से लिया गया है जो ''पहले'' (*pro*) के अर्थ वाले उपसर्ग के साथ ''दोष या आरोप लगाना'' (*aitiaomai*) के लिए शब्द को मिलाता है।[4] इस शब्द का ''इस्तेमाल किसी अपराध में पहले दोषी ठहराए गए व्यक्ति के लिए कानूनी शब्द के रूप में किया जाता'' था।[5]

कौन सा ''अपराध''? पाप। 1:18 से पौलुस की चर्चा मुनष्यजाति के पापपूर्ण होने पर रही है, परन्तु ''पाप'' शब्द का इस्तेमाल यहां पहली बार हुआ है। उसने इतना नहीं कहा कि ''सबने पाप किया'' (जैसे 3:23 में), बल्कि यह कहा कि सब ''पाप के *वश में* '' हैं। ''वश में'' का अनुवाद उपसर्ग *hupo* से किया गया है। *Hupo* का इस्तेमाल ''के अधीन या के अधिकार में होने''[6] के अर्थ में किया जा सकता है (देखें मत्ती 8:9; गलातियों 3:25; 1 तीमुथियुस 6:1)। रोमियों 3:9 में RSV का अनुवाद ''पाप की शक्ति के अधीन'' है। AB का अनुवाद ''द्वारा पकड़े गए और इसकी शक्ति और नियंत्रण के वश में'' है।

''पाप'' को निरंकुश स्वामी के रूप में माना जाता है। हमारा *जन्म,* ''पाप की शक्ति के अधीन नहीं होता; परन्तु जब हम इतने बड़े जो जाते हैं कि व्यक्तिगत पाप करें तो हम *पाप के गुलाम* बन जाते हैं'' (देखें रोमियों 6)। जैसा कि हम देखेंगे कि इससे छुटकारे की एकमात्र आशा मसीह का लहू है।

अन्तिम प्रमाण (3:10-19)

पौलुस ने अपना आरोप लगाया था कि यहूदी और अन्यजाति दोनों ही पाप के अधीन हैं और उन्हें परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है। परन्तु उसे मालूम था कि उनमें से एक समूह अर्थात यहूदी लोग उस निर्णय का विरोध करेंगे और निर्णायक प्रमाण की मांग करेंगे। इस कारण वह व्यवस्था की ओर मुड़ गया जिस पर वे शेखी मारते थे (देखें 2:23)। उसने आरम्भ किया, ''जैसा लिखा है'' (3:10)।

वचन

10 से 18 आयतों में पौलुस ने पुराने नियम की कम से कम दो पुस्तकों, भजन संहिता और यशायाह में से नौ आयतें उद्धृत कीं।[7] बाइबल के समय में उसके द्वारा अपनाए गए ढंग को *charaz* कहा जाता था, जिसका अर्थ है ''मोतियों को इकट्ठे पिरोना।''[8] आज हम इसे ''प्रमाण के वचन'' के पिरोए जाने के रूप में कह सकते हैं। रोमियों की पुस्तक में पौलुस ने इस ढंग का इस्तेमाल कई बार किया (देखें 9:25-27; 10:18-21; 11:8-10; 15:9-12)। परन्तु इस पत्र में पुराने नियम की आयतों की यह सबसे लम्बी शृंखला है। वास्तव में यह नये नियम की ऐसी सबसे लम्बी शृंखला है।

पौलुस ने जैसा कि वह आम तौर पर करता था, पुराने नियम के यूनानी अनुवाद से उद्धृत किया। पहले उसने मनुष्यजाति की *विद्रोही स्थिति* [9] पर भजन संहिता 14:1-3[10] में से उद्धृत किया: ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं''

(रोमियों 3:10-12)। "धर्मी" का इस्तेमाल यहां "परमेश्वर के साथ सीधा खड़े होने" के अर्थ में किया गया है। सब ज़िम्मेदार लोग कुछ बातें करते हैं जो *सही* होती हैं, परन्तु कुछ बातें वे ऐसे भी करते हैं जो *गलत* होती हैं। इसके परिणाम स्वरूप वे परमेश्वर के सामने दोषी ठहरते हैं (देखें याकूब 2:10)।

ऐसा क्यों है? इस स्थिति को मिट्टी और कुछ पानी मिले बर्तन से समझाया जा सकता है। मिट्टी में कुछ साफ़ पानी डालें। क्या पानी मिट्टी को साफ़ कर देता है? नहीं। अब पानी में कुछ मिट्टी डालें। क्या मिट्टी पानी को गंदा कर देती है? बेशक। पाप ऐसा ही है: आपके जीवन में चाहे कितनी भी भलाई क्यों न हो, उसमें कुछ न कुछ बुराई रहती है, और यही आपको पापी बनाती है (देखें याकूब 2:10)। क्या इसके कोई उपवाद हैं?[11] भजन लिखने वाला इससे और साफ़ नहीं कह सकता था। पौलुस ने उसे यह कहते हुए उद्धृत किया, "... नहीं ... कोई नहीं ... नहीं ... एक भी नहीं"!

किसी को भी यह इनकार करने से रोकने के लिए कि भजन संहिता 14 वाला दोष उन पर लागू होता है, पौलुस ने सबसे प्रसिद्ध पापों अर्थात जीभ के पापों की ही बात की। मनुष्यजाति की *बेमेल* वार्तालाप पर भजन संहिता से उसने तीन आयतें उद्धृत कीं: "उन का गला खुली हुई कब्र है: उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है" (रोमियों 3:13क; देखें भजन संहिता 5:9); "उन के होठों में सापों का विष है" (रोमियों 3:13ख; देखें भजन संहिता 140:3); "उनका मन श्राप और कड़वाहट से भरा है" (रोमियों 3:14; देखें भजन संहिता 10:7)। कागज़ की कमी हमें इन स्पष्ट आयतों को विस्तार से देखने की अनुमति नहीं देगी। मैं केवल इतना ही पूछता हूं, क्या कोई यह इनकार कर सकता है कि कभी न कभी उसने अपनी जीभ से पाप किया है? निश्चय ही हम सब याकूब के साथ सहमत होंगे, जिसने जीभ को कहा कि यह "एक ऐसी बला है ... जो प्राण नाशक विष से भरी हुई है" (याकूब 3:8)।

अधार्मिकता पाप की और इन गहराइयों में कहां तक जा सकती है? यशायाह 59:7, 8 से उद्धृत करते हुए पौलुस मनुष्यजाति के *परिणामी आचरण* की ओर मुड़ गया: "उन के पांव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं। उन के मार्गों में नाश और क्लेश है। उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना" (रोमियों 3:15-17)। रिचर्ड रोजर्स ने लिखा कि 13 और 14 आयतों में "गला," "जीभों," "होंठों," और "मूंह" शब्दों और आयत 15 में "पांव" शब्द लिखा। फिर उसने ध्यान दिया कि मनुष्यजाति "सिर से पांव तक" भयंकर बीमार है।[12]

पौलुस ने वचनों की अपनी श्रृंखला को भजन संहिता 36:1 से उद्धृत करते हुए समाप्त किया: "उनकी आंखों के साम्हने परमेश्वर का भय नहीं" (रोमियों 3:18)। "भय" (*phobos*) गहरे सम्मान और भय को दर्शाता है। परमेश्वर का सम्मान करने में असफल होना ही हर पाप का सार है। जो व्यक्ति परमेश्वर का सम्मान नहीं करता वह दूसरों का सम्मान नहीं करेगा; वह अपना भी सम्मान नहीं करेगा।

कुछ लोग रोमियों 3:9-18 का इस्तेमाल "पूर्ण आनुवंशिक भ्रष्टता" की शिक्षा को साबित करने के लिए जिसमें यह सिखाया जाता है कि बच्चों पर जन्म से ही आदम के पाप का बोझ होता है, का इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं। शिक्षा की इस गलती पर हम अध्याय 5 में पहुंचने पर चर्चा करेंगे, परन्तु अभी के लिए दो अवलोकन सही हैं। पहला बाइबल आम तौर पर यह शिक्षा नहीं देती। बच्चे जन्म के समय शुद्ध और पवित्र होते हैं (मत्ती 18:3); हर व्यक्ति अपने ही पापों

के लिए ज़िम्मेदार है, न कि आदम के पाप के लिए (देखें यहेजकेल 18:2)। दूसरा, रोमियों 3:9-18 से उद्धृत वचन यह शिक्षा नहीं देता। पुराने नियम के हवाले देखें तो आप पाएंगे कि हर आयत ज़िम्मेदार लोगों की बात करती है न कि बच्चों की।

उद्देश्य

पौलुस ने यहूदियों से मिलने वाले उत्तर का अनुमान लगा लिया। भजन संहिता और यशायाह की अधिकतर आयतें मूल में अन्यजातियों या इस्राएलियों के अविश्वासी भाग के लिए थीं। आगे पौलुस ने जोड़ा, ''हम जानते हैं, कि व्यवस्था[13] जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अधीन है'' (3:19क)। पौलुस के तर्क को इस प्रकार कहा जा सकता है: व्यवस्था के विशेष वचन दूसरों के लिए थे, परन्तु परमेश्वर ने व्यवस्था *यहूदियों* को ही दी थी। व्यवस्था में जो कुछ भी शामिल था वह यहूदियों के लिए *अपने* ऊपर लागू करने के उद्देश्य से था। इसके अंतिम विश्लेषण में, व्यवस्था की कही हर बात उनके लिए थी जो ''व्यवस्था के अधीन'' थे।

व्यवस्था उनसे बात करती थी जो इसके अधिकार के अधीन थे।[14] ''इसलिए कि हर एक मुंह बन्द किया जाए और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे'' (आयत 19)। अन्तिम ''मुंह'' जो ''बन्द'' किया जाना था वह यहूदियों का ही था। एक बार यह काम हो जाने पर ''सारे संसार'' (यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को) समझ आ जाना था कि वे सचमुच में ''परमेश्वर को जवाबदेह'' हैं (देखें रोमियों 14:12)।

एक बार फिर अदालत में इस्तेमाल होने वाला रूपक दिया गया है।''मुंह बन्द किए जाने की बात न्यायालय में प्रतिवादी की तस्वीर को दिखाता है जो अपने बचाव में बोलने का अवसर मिलने पर, खामोश रहता है, क्योंकि वह अपने विरुद्ध दिए गए प्रमाण का जवाब नहीं दे सकता।''[15] NEB में कि ''अपने बचाव में कहने के लिए किसी के पास कुछ नहीं [होगा]।''

अन्तिम नियम (3:20)

यहूदियों का ''मुंह बन्द'' करने के लिए पौलुस को एक और बात कहनी थी। एक अर्थ में अभी-अभी उसने कहा था कि व्यवस्था उन्हें दोषी ठहराती है। उनके लिए यह स्वीकार करना कठिन था। उनका मानना था कि यदि उन्हें उद्धार का कोई आश्वासन मिला है, तो वह परमेश्वर में उन्हें व्यवस्था के साथ ही दिया है। उस प्रिय विश्वास के उत्तर में जो ''दोषी ठहराने'' और ''धर्मी ठहराने'' के अगले भाग के लिए पुल के रूप में काम करता है (नीचे दी गई रूपरेखा देखें)।

आयत 20क एक नियम बनाती है, जो रोमियों की पुस्तक को समझने के लिए आवश्यक है: ''क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई मनुष्य[16] अपनी नज़र में धर्मी नहीं ठहराया जाएगा।'' मूलतया यूनानी धर्मशास्त्र में इसका अर्थ केवल इतना है कि ''व्यवस्था के कामों से'' किसी को धर्मी नहीं ठहराया जाएगा। अंग्रेज़ी के NASB सहित अधिकतर अनुवादों में ''व्यवस्था'' (या कुछ ऐसा) है क्योंकि पौलुस एक अनुमानित यहूदी आपत्ति का उत्तर दे रहा था और उसके मन में मुख्यतया मूसा की व्यवस्था थी। हमें इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि पौलुस एक महत्वपूर्ण सच्चाई ही बता रहा था कि किसी का उद्धार *किसी* व्यवस्था के कामों से नहीं हो सकता।

ऐसा क्यों? पौलुस ने आगे कहा, ''इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा[17] पाप की पहचान[18] होती

है'' (आयत 20ख)। ईश्वरीय व्यवस्था पाप की पहचान कराती है, इसलिए यह हमें पापियों के रूप में सामने लाती है। डी. मार्टेन लॉयर्ड-जोनस ने लिखा है कि आप ''सबसे अच्छे, सुचरित्र, सबसे पढ़े लिखे, सबसे [उदार]; सबसे आदर्शवादी, सबसे बड़े विचारक, के बारे में जो चाहें कह सकते हैं। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ जो व्यवस्था की परीक्षा के सामने खड़ा हो सके। अपने साहुल की डोरी लटकाएं,[19] तो वह इस पर खरा नहीं उतरता।''[20] फिलिप्स के अनुवाद में ऐसे ही रूपक का इस्तेमाल किया गया है: ''व्यवस्था की स्पष्टवादिता ही है जो हमें दिखाती है कि हम कितने बिगड़े हुए हैं।''

अध्याय 7 में पौलुस ने इस सच्चाई को विस्तार दिया, परन्तु मैं अब इस नियम के एक पहलू पर ज़ोर देना चाहता हूं: व्यवस्था, चाहे वह कोई भी व्यवस्था क्यों न हो का उद्देश्य गलती को *सामने लाना* होता है न कि गलती करने का *बहाना* देना।[21] उदाहरण के लिए हाइवे की गति के नियम भी देख लें। कल्पना करें कि गाड़ी चलाते समय मेरा ध्यान इधर-उधर भटक जाता है और इसकी स्पीड नियमों में बताई गई सीमा से बढ़ जाती है। ट्रैफिक पुलिस वाला मुझे रोक लेता है। वह कहता है, ''आप 90 किलोमीटर प्रति घंटा वाले क्षेत्र में 100 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से जा रहे थे।'' मैं उत्तर देता हूं, ''बिल्कुल सही कहा। पर सफ़र के पहले पचास किलोमीटर मैंने गति सीमा से कम पर गाड़ी चलाई थी। निश्चय ही यह मेरी गलती को सुधार देता है।'' आपको क्या लगता है कि सिपाही क्या उत्तर देगा? आप पर हंसना बन्द करने के बाद कोई शक नहीं कि वह आपका और बड़ा चालान काट देगा।

याकूब ने वचन की तुलना दर्पण से करते हुए एक अलग रूपक का इस्तेमाल किया (याकूब 1:23)। दर्पण यह दिखा सकता है कि मेरी गाल पर दाग है, पर यह उस दाग को मिटा नहीं सकता। वैसे ही, जैसा कि रोजर्स ने बताया, ''व्यवस्था प्रकाश तो डालती है, पर हटा नहीं सकती।''[22]

यह आवश्यक है कि हम इस नियम को मन में बिठा लें। हम में से बहुत से लोगों को व्यवस्था की बनावट अच्छी लगती है। हम जानना चाहते हैं कि क्या ''सही'' है और क्या ''गलत।'' हम जानना चाहते हैं कि ''नियम'' क्या हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है ... पर एक खतना है: हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि धर्म में केवल व्यवस्था का पालन करने पर ही ध्यान दिया जाता है। मुझे गलत मत समझें। अपनी पूरी ताकत से परमेश्वर के नियमों का पालन करना बहुत आवश्यक है। यूहन्ना ने लिखा है, ''यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं। जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उसमें सत्य नहीं'' (1 यूहन्ना 2:3, 4)। इसके साथ ही हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि हम ''इतने अच्छे'' या ''इतने आज्ञाकारी'' रहे हैं कि हमें उद्धार पाने या कमाने की आवश्यकता नहीं है। हम चाहे कितनी भी कोशिश क्यों न कर लें, हम पूरी तरह से व्यवस्था को नहीं मान सकते।

थोड़ी देर पहले हमने दो उदाहरणों पर विचार किया था। जिसमें एक गति सीमा का पालन करने और दूसरी दर्पण के सामने देखने का था। जबसे मुझे कार चलाने का लाइसेंस मिला है तब से मैं गति के नियमों की पालना करने की कोशिश करता हूं; तौभी ड्राइविंग के बावन वर्षों के दौरान मेरे तीन चालान कट चुके हैं। इसी प्रकार मैं अपना मुंह साफ़ रखने की कोशिश रखता हूं; परन्तु कई बार शीशे में देखने पर मुझे पता चलता है कि यह कुछ गंदा है। बेशक हम परमेश्वर के

नियमों का पालन करने के लिए समर्पित हों, तौ भी हम उन्हें पूरा नहीं मान सकते। कोई थोड़ा चलकर गिर सकता है, कोई थोड़ा आगे जाकर, परन्तु गिरते हम सब हैं। हम सब व्यवस्था के तोड़ने वाले हैं। जैसा कि एक पुराने गीत के बोल हैं, ''न मेरे हाथ की मेहनत व्यवस्था की मांग पूरी कर सकती है।''[23]

ऐसा है तो हमारा उद्धार पूरी तरह से व्यवस्था का पालन करने के बजाय किसी और आधार पर होना चाहिए। इससे आवश्यक प्रश्न खड़े होने चाहिए। क्योंकि हमारा उद्धार व्यवस्था का पालन करने से नहीं होता, तो फिर हमारा उद्धार कैसे *हो* सकता है ? हम *कैसे* बचाए जा सकते हैं ? क्या हमारे लिए कोई आशा है ? इस प्रकार पौलुस ने ''धर्मी ठहराए जाने'' की अपनी चर्चा के लिए अपने पाठकों के मनों को तैयार किया।

सारांश

मुकदमा खत्म हो चुका है। जज के सामने प्रतिवादी खड़े हैं। गम्भीर स्वर में वह निर्णय की घोषणा करता है: ''आरोपियों की तरह दोषी ठहराए गए!'' पाप पर अन्तिम निर्णय यही है कि ''यहूदी और अन्यजाति सब [हमारे सहित] पाप के अधीन हैं'' (रोमियों 3:9; NIV) ! हम सब पापी हैं, जो अपने पापी होने में खोए हुए हैं।

शनिवार शाम के समय एक आदमी हाथ में चमड़े के केस वाला एक आदमी छोटा नया नियम लेकर पार्क में टहल रहा था। जवानों की एक टोली ने समझा कि उस केस में कोई कैमरा है और उससे उनका फोटो लेने के लिए कहने लगे। उसका उत्तर था, ''मेरे पास तो आपकी तस्वीर पहले से ही है।'' उन्होंने उससे पूछा कि यह कैसे हो सकता है कि उसके पास उनकी तस्वीर है क्योंकि वे तो उससे पहले कभी मिले ही नहीं। उसने अपना नया नियम निकाला और रोमियों 3:9-18 में से पढ़ने लगा।[24] हमें अच्छा लगे या न, मसीह के बिना *हमारी* आत्माओं की तस्वीर भी ऐसी ही है।

इस पाठ के शीर्षक में ''अन्तिम निर्णय'' के बाद प्रश्न चिह्न है। मैंने इसे यह ज़ोर देने के लिए रखा है कि पाप के बोर में ''अन्तिम निर्णय'' आपके जीवन का ''*अन्तिम* निर्णय'' होना आवश्यक नहीं है। अगला भाग विरोध सूचक संयोजक ''परन्तु'' (आयत 21) के साथ आरम्भ होता है। कुछ बदलाव होने वाला है। रोमियों की पुस्तक हमें यह बताने वाली है कि परमेश्वर और मसीह ने हमारे लिए ऐसा क्या किया है जिससे हमारा उद्धार हो सके। पौलुस ''पाप की समस्या से उद्धाकर्त्ता के प्रबन्ध में बदलने'' को तैयार था।[25] सो अंधकार से परेशान न हों। रौशनी होने को है!

आप में से कुछ लोग पहले से इस बात को समझते हैं कि मसीह ने हमारे लिए क्या किया है और उसके प्रेम को स्वीकार करने के लिए आपको क्या करना है (यूहन्ना 14:15; मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38)। यदि आप समझते हैं तो अपने घमण्ड को एक और रखकर अपने मुंह ''बन्द करके'' (रोमियों 3:19) आज ही उसके पास आ जाएं (मत्ती 11:28) !

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ का इस्तेमाल करने पर आपको चाहिए कि अविश्वासी मसीहियों को गलती करने

के अपने बहाने एक ओर रखने (''अपने मुंह बन्द करने'') और घर वापस आने को प्रोत्साहित करें (गलातियों 6:1; प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।

(1) पौलुस द्वारा उद्धृत पुराने नियम के वचनों की पृष्ठभूमि देते और (2) उदाहरणों में रूपक की समीक्षा करते हुए इस पाठ को विस्तार दिया जा सकता है।

मिट्टी और पानी के उदाहरण सिखाने के लिए सबक के रूप में दिया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 166. [2]यूनानी में समानता और भी अधिक सुनाई देती है। दोनों प्रश्नों का आरम्भ *ti ouv* (''तो क्या'') के साथ होता है। [3]कई लेखकों का मानना है कि ''हम'' यह संकेत देता है कि पौलुस अपने और अन्य मसीही लोगों की बात कर रहा था, परन्तु संदर्भ पौलुस के अपने साथी यहूदियों के साथ परिचय का पक्ष देता है (देखें रोमियों 9:3ख)। जो भी हो, निष्कर्ष एक ही रहता है कि *सब* ''पाप के वश'' में हैं। [4]*दि एनेलिटकल ग्रीक लेक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 10, 341. [5]जॉन मैकआर्थर, *रोमन्स 1-8,* दि मैकआर्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1991), 180. [6]डी. स्टुअर्ट ब्रिसको, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 77; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ. अनर्डट एण्ड एफ. विलबर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 851. [7]कइयों का विचार है कि रोमियों 3:10, 11 तीसरे स्रोत यानी सभोपदेशक 7:20 से लिया गया है। [8]एलफ्रेड एडरशेम, *दि लाइफ एण्ड टाइम ऑफ़ जीज़स द मसायाह,* न्यू अपडेटड एडि. (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993), 311. [9]इस भाग में पीछे किए गए तीन वाक्यांश मैकार्थर 181 से लिए गए थे। [10]भजन संहिता 53:1-3 लगभग ऐसा ही है।

[11]एकमात्र अपवाद वे हैं जो जवाददेह नहीं है, जैसे बच्चे और मंदबुद्धि वाले लोग। [12]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसेट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 56. [13]कई लोग यह ज़ोर देते हैं कि शब्द ''व्यवस्था'' तौरेत (पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकें) को भी कहा जा सकता है; परन्तु हमारे वचन पाठ में पौलुस ने भजन संहिता और यशायाह से उद्धृत किया जिसे उसने व्यवस्था कहा। ''व्यवस्था'' शब्द केवल तौरेत से अधिक के लिए हो सकते हैं। [14]आयत 9 में ''वश में'' शब्द का इस्तेमाल देखें। [15]सी. ई. बी. क्रेनफील्ड, *रोमन्स: ए शार्टर कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 67. [16]''शरीर'' (*sarx*) पर शृंखला में आगे चर्चा की जाएगी यहां इसका अर्थ केवल ''व्यक्ति'' है। [17]मूलतया आयत 20 में ''व्यवस्था के द्वारा'' है, NASB वाली मेरी प्रति में दिए एक नोट के अनुसार। [18]यह ''ज्ञान'' (*gnosis*) के लिए सामान्य शब्द नहीं एक बल्कि मज़बूत रूप (*epignosis*) है, जिसका अर्थ ''अच्छी तरह से जानना'' है और ''उन्नत 'ज्ञान' '' का सुझाव देता है (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविल्लेः थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 347)। [19]''साहुल की डोरी'' जिस पर भार के साथ एक डोरी (रस्सी) होती है। इसे यह देखने के लिए कि दीवार सीधी बन रही है या नहीं दीवार के साथ लगाया जाता है। [20]डी. मार्टिन लॉयड-जोनस, *रोमन्स: द राइटियस जजमेंट ऑफ़ गॉड (2:1-3:20)* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: मिनिस्ट्री रिसोर्सिस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1989), 198.

[21]ऐसे उदाहरणों का इस्तेमाल करें, जिनसे आपके सुनने वाले परिचित हों। [22]रोजर्स, 58. [23]ए. एम. टॉपलेडी, ''रॉक ऑफ़ ऐजिस'' *सौंग्स ऑफ़ फेथ एण्ड प्रेज़,* कम्प. एण्ड एडि. अल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो ला.: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [24]मैकआर्थर, 187 से लिया गया। [25]चॉर्ल्स आर. स्विंडल, *कमिंग टू टर्मस विद सिन: ए स्टडी ऑफ़ रोमन्स 1-5* (अनाहिम, कैलिफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1999), 44.